सिक्किम विश्वविद्यालय
स्थापित: 2007

वॉल्यूम: VI
अंक: VII
October '18

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

संपादकीय

एसयू क्रॉनिकल के अक्टूबर अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे खुशी हो रही है क्योंकि विश्वविद्यालय के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण महीना रहा है, कारण यह है कि हमने प्रो. अविनाश खरे का विश्वविद्यालय के तीसरे कुलपति के रूप में स्वागत किया था।

विश्वविद्यालय अभी केवल ग्यारह साल का है, फिर भी विश्वविद्यालय ने प्रो. महेंद्र पी. लामा और प्रो. टी. बी.सुब्बा, क्रमश प्रथम और द्वितीय कुलपति जैसे प्रख्यात शिक्षाविदों और दूरदर्शी के कुशल नेतृत्व में शैक्षणिक और अनुसंधान में महत्वपूर्ण सफलता हासिल किस है।

हम प्रोफ़ेसर ज्योति प्रकाश तामांग, डीन, जीवन विज्ञान विद्यापीठ द्वारा किए गए असाधारण योगदान के लिए भी बहुत आभारी हैं जिन्होंने एक वर्ष के लिए विश्वविद्यालय के कार्यवाहक कुलपति के रूप में कार्य किया।

हम कुलपति प्रो. अविनाश खरे का हार्दिक स्वागत करते हैं क्योंकि उन्होंने कुलपति का कार्यभाग ग्रहण किया है और हम उनके कुशल मार्गदर्शन और नेतृत्व में विजय के और कई पड़ावों को प्राप्त करने की आशा करते हैं।

मुझे उम्मीद है कि आप एसयू क्रॉनिकल को पढ़ने का आनंद लेते रहेंगे और लेखों का योगदान करते रहेंगे।

कुंजिनी प्रकाश दर्नाल

इस अंक में :

संपादकीय
सिक्किम विश्वविद्यालय के तृतीय कुलपति के रूप में प्रो. अविनाश खरे की नियुक्ति
भारत में महिलाओं के लिए कानूनी प्रावधानों पर छात्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता
शंघाई विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन - डॉ. दिनेश कुमार अहिरवार, सहायक प्राध्यापक, शांति एवं द्वंद्व अध्ययन एवं प्रबंधन विभाग द्वारा एक संक्षिप्त रिपोर्ट
पादप विज्ञान और वर्तमान मुद्दे पर विशेष व्याख्यान
सिक्किम विश्वविद्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह २०१८

प्रो. अविनाश खरे का तृतीय कुलपति के रूप में कार्यभार ग्रहण

प्रो. अविनाश खरे को भारत के राष्ट्रपति द्वारा विश्वविद्यालय के विजिटर के रूप में उनकी क्षमता में सिक्किम विश्वविद्यालय के तीसरे कुलपति के रूप में नियुक्त किया गया है। प्रो. खरे एक प्रसिद्ध खगोल भौतिक विज्ञानी हैं और प्लाज्मा रिसर्च के क्षेत्र में सबसे प्रसिद्ध वैज्ञानिकों में से एक हैं।

प्रो. खरे ने दिनांक ११ अक्टूबर २०१८ को कार्यवाहक कुलपति प्रो. ज्योति प्रकाश तामांग से विश्वविद्यालय के तीसरे कुलपति के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

सिक्किम विश्वविद्यालय के दूसरे कुलपति के रूप में प्रो. टी.बी.सूबा का अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद प्रो. ज्योति प्रकाश तामांग दिनांक १३ अक्टूबर २०१७ से विश्वविद्यालय के कार्यवाहक कुलपति बने।

प्रो. खरे को विश्वविद्यालय के कावेरी हॉल में एक प्रवेशन कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों और छात्रों द्वारा स्वागत किया गया।

कुलपति प्रो. खरे ने विश्वविद्यालय की उत्कृष्टता की दिशा में काम करने की प्रबल अभिलाषा और इच्छा प्रकट की।

पृष्ठ सं ३ में जारी

Mailing Address: suchronicle@cus.ac.in

भारत में महिलाओं के लिए कानूनी प्रावधानों पर छात्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता

डॉ. स्वाति ए. सचदेव, पीठासीन अधिकारी, आ.शि.स द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट

राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडबल्यू), भारत के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय की अंतर्राष्ट्रीय शिकायत समिति (आईसीसी) ने २६ अक्टूबर २०१८ को बराद सदन में "भारत में महिलाओं के लिए कानूनी प्रावधान" विषय पर छात्रों के लिए एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता में सिक्किम विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षणिक विभागों से पैंतीस छात्रों ने भाग लिया।

सुश्री मोनिका लखान्द्री, राजनीति विज्ञान विभाग को प्रथम पुरस्कार और मो. फरज अहमद, विधि विभाग को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

तृतीय पुरस्कार सुश्री इशराज अहमद, विधि विभाग, निशा राई, विधि विभाग, सुश्री प्रियाश्री गोगोई, मानवशास्त्र विभाग, सुश्री स्मृति घटनी, राजनीति विज्ञान विभाग और सुश्री सौमिता घोष, शिक्षा विभाग को प्राप्त हुआ।

आंतरिक शिकायत समिति, सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक २० नवंबर २०१८ को आयोजित किया गया था। सम्मानीय अतिथि के रूप में कुलपति प्रो. अविनाश खरे, कुलसचिव श्री टी.के.कौल और श्रीमती नवतारा शारदा, एडवोकेट, सिक्किम उच्च न्यायालय उपस्थित थे। कार्यक्रम में संकाय सदस्यों, छात्रों और आईसीसी के सदस्यों ने भाग लिया।

डॉ. स्वाति ए. सचदेवा ने आईसीसी की विभिन्न गतिविधियों पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके बाद सिक्किम उच्च न्यायालय के एडवोकेट श्रीमती नवतारा शारदा ने कार्यस्थल (रोकथाम और निवारण) अधिनियम २०१३ में महिलाओं के यौन उत्पीड़न पर एक व्याख्यान दिया गया। श्रीमती शारदा ने कार्यस्थल पर विभिन्न प्रकार के यौन उत्पीड़न और अधिनियम में दिए गए दंड के बारे में विस्तार से बात की। व्याख्यान के बाद कुलपति प्रो. अविनाश खरे और कुलसचिव श्री टी.के.कौल द्वारा संक्षिप्त संबोधन दिया गया।

कुलपति प्रो. खरे ने विजेताओं को नकद पुरस्कार और विजेताओं और प्रतियोगिता में सक्रिय रूप से भाग लेनेवाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया । विजेता सुश्री मोनिका लखान्द्री को रुपये का रु. २००० का नकद पुरस्कार , द्वितीय स्थान पर रहे मो. फराज अहमद को रु. १५००, इशराज अहमद, निशा राई, प्रियश्री गोगोई, स्मृति घटानी और सौमिता घोष को तृतीय स्थान पर प्रत्येक को रु. ५०० का नगद पुरस्कार प्राप्त किया। नकद पुरस्कार राष्ट्रीय महिला आयोग, भारत द्वारा प्रायोजित किया गया था।

"इंटरनेशनल फोरम ऑन क्रॉस- कल्चरल कम्युनिकेशन ऑफ चाइनाज बेल्ट रोड इनिशिएटिव एंड जर्नलिज्म एंड कम्यूनिकेशन एजुकेशन" पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन"

डॉ. दिनेश कुमार अहिरवार, सहायक प्राध्यापक, शांति एवं द्वंद्व अध्ययन एवं प्रबंधन विभाग

डॉ. दिनेश कुमार अहिरवार का चीनी अध्ययनों में विशेषज्ञता है और उन्होंने हाल ही में १९ अक्टूबर से २१ अप्रैल २०१८ तक पत्रकारिता एवं संचार विद्यापीठ, शंघाई विश्वविद्यालय, शंघाई, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना द्वारा "इंटरनेशनल फोरम ऑन क्रॉस- कल्चरल कम्युनिकेशन ऑफ चाइनाज बेल्ट रोड इनिशिएटिव एंड जर्नलिज्म एंड कम्युनिकेशन एजुकेशन" पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
डॉ. अहिरवार को शंघाई अकादमी, जो अकादमी सामाजिक विज्ञान, चीन और शंघाई के लोगों की सरकार द्वारा स्थापित एक शोध संस्थान है, में आयोजित सम्मेलन के लिए आमंत्रित किया गया था। अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों के बीच संचार और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए शैक्षणिक अध्ययन के अन्वेषक को प्रोत्साहित करने के लिए इसीलिए दुनिया भर से स्थापित बुद्धिजीवियों का एक साथ होने के लिए "इंटरनेशनल फोरम ऑन क्रॉस-कल्चरल कम्युनिकेशन ऑफ चाइना बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव एंड जर्नलिज्म एंड कम्युनिकेशन एजुकेशन" शंघाई एकेडमी - विश्व मीडिया अनुसंधान केंद्र और कई शीर्ष स्तर के अनुसंधान संस्थानों का सह-आयोजक था। सम्मेलन में दुनिया के विभिन्न हिस्सों से कई चीनी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों ने भाग लिया।

डॉ. दिनेश कुमार अहिरवार ने "बेल्ट रोड इनिशिएटिव (बीआरआई)" के माध्यम से "द कल्चरल ग्लोबलाइज़ेशन एंड कन्फ्यूशियस रिवाइवलिज़्म" पर बात की, जहाँ उन्होंने बीआरआई के सांस्कृतिक और विकासात्मक पहलुओं और उभरते विश्व व्यवस्था में इसके निहितार्थ पर चर्चा की। बीआरआई केवल आर्थिक वैश्वीकरण नहीं है, बल्कि २१ वीं शताब्दी में सांस्कृतिक वैश्वीकरण द्वारा पालन किया जाना है। बीआरआई पश्चिम से पूर्व की ओर विद्युत संक्रमण का एक स्पष्ट प्रकटीकरण है। यह पहली बार है, जब पारंपरिक रूप से शांतिपूर्ण तरीके से बिजली का संक्रमण हो रहा है। हालांकि, सद्भाव की अवधारणा पुराने कन्फ्यूशियस दर्शन में निहित है जो चीन के लिए सांस्कृतिक वैश्वीकरण के संदर्भ में प्रासंगिक है।

पृष्ठ सं १ से जारी

प्रो. अविनाश खरे ने बी.एससी (ऑनर्स) हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से १९७९ और एम.एससी. १९८१ में एपीएस विश्वविद्यालय रीवा से की है। उन्होंने १९८५ में फिजिकल रिसर्च लैब, अहमदाबाद से "इंस्टेबिलिटीज़ एंड टर्ब्युलेंस इन मिरर मशीन्स" पर पीएचडी की है।

प्रो. खरे कई प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों, जैसे ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय, ब्रिटेन, सैद्धांतिक भौतिकी अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, ट्राइस्टे इटली, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सैन डिएगो, यूएसए, लोवा विश्वविद्यालय, लोवा सिटी, यूएसए, कोलंबिया विश्वविद्यालय,न्यू यॉर्क, यूएसए स्पेस प्लाज़्मा और एरोनोमिक रिसर्च केंद्र, नासा, हंट्सविले, एआई यूएसए से जुड़े रहे हैं । वे इंस्टीट्यूट फॉर प्लाज़्मा रिसर्च भट गांधीनगर, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ़ फंडामेंटल रिसर्च, मुंबई और भौतिकी और खगोल भौतिकी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय से भी जुड़े रहे हैं।

प्रो. खरे की शोध रुचि फ्यूज़न ऑफ़ प्लास्मास, तोकामक फिज़िक्स, नॉन-न्यूट्रल प्लास्मास, रॉकेट/स्पेस प्रोपल्शन, लेज़र प्लाज़्मा इंटरेक्शन, एस्ट्रोफिज़िक्स, ग्रेविटेशनल कॉलाप्स, तारें और ग्रहों के गठन आदि कुछ नाम में है।

उन्हें भौतिकी में उत्कृष्ट योगदान के लिए होमी भाभा यंग साइंटिस्ट फेलोशिप अवार्ड (१९९३-९५), इन्सा बीरेन रॉय मेमोरियल लेक्चर अवार्ड (२०१६) जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्होंने महत्वपूर्ण पदों, जैसे अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार समिति (आईएसी), डस्टी प्लाज्मा भौतिकी पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीपीडी) , सदस्य, अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम समिति, एशिया प्रशांत फ्यूजन एसोसिएशन सम्मेलन, सदस्य, अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार समिति प्लाज्मा कॉलेज, एएस अंतर्राष्ट्रीय सैद्धांतिक भौतिकी केंद्र, ट्राइस्टे इटली, इंडियन नेशनल सेंस एकेडमी (आईएनएसए) (२०११), फैलो, नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज, भारत, इलाहाबाद, यहाँ कुछ नाम उल्लेखित हैं, पर कार्य निर्वाह किया।

पादप विज्ञाप के वर्तमान विषयों पर विशेष व्याख्यान

डॉ. संतोष कुमार राई, सहायक प्राध्यापक, वनस्पति विभाग द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट

वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा १ जून २०१८ को बराद सदन में पादप विज्ञान में वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रातः १०:०० बजे प्रख्यात संसाधन व्यक्ति प्रो. सरोज कुमार बारिक, निदेशक, सीएसआईआर- राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश और प्रो. देबाशीष बनर्जी, जैवविज्ञान सलाहकार, बाबा आमटे जन सशक्तिकरण केंद्र, बागली (देवास), इंदौर, मध्य प्रदेश और विभाग के अध्यक्षों सहित विश्वविद्यालय के अधिकारियों के दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। संसाधन व्यक्तियों को पारंपरिक दुपट्टा (खडा) और पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया गया। वनस्पति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. धनी राज छेत्री ने अपने स्वागत भाषण में अनुसंधान और सह-पाठ्यचर्या सहित विभाग की गतिविधियों का परिचय कराया। स्वागत भाषण के बाद प्रो. ज्योति प्रकाश तामांग, विश्वविद्यालय के कार्यवाहक कुलपति ने सभा को संभोधित किया और युवा संकाय सदस्यों और छात्रों को शोध और प्रकाशन के लिए प्रेरित किया। उदघाटन सत्र के तुरुन्त बाद तकनीकी सत्र प्रारम्भ हुआ, जहां प्रो. सरोज कुमार बारिक ने "पूर्वी हिमालय में जैव-विविधता आधारित जैव-अर्थव्यवस्था" पर युगानुकूल व्याख्यान प्रदान किया । अपने व्याख्यान में उन्होंने भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में रहने वाले लोगों की समृद्धि के लिए जैव-विविधता से समृद्ध पूर्वी हिमालय और जैव-संसाधनों की वैज्ञानिक जांच पर प्रकाश डाला।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अद्वितीय अणुओं का पता लगाने की बहुत संभावना है जो दवा की खोज के लिए उपयोग किए जा सकते हैं। उन्होंने छात्रों के लिए शैक्षिक यात्रा के संबंध में भारत सरकार की नई योजनाओं के बारे में भी सदन को सूचित किया और वादा किया कि वह इस मामले के बारे में विभाग के साथ संवाद करेंगे।

दूसरा व्याख्यान प्रो. देबाशीष बनर्जी द्वारा " आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलें : आगे का मार्ग" विषय पर दिया गया था। अपने व्याख्यान में उन्होंने मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों खासकर बीटी-कपास के महत्व पर प्रकाश डाला और किसानों की दुर्दशा पर भी प्रकाश डाला, चूंकि सरकार की कुछ नीतियां किसानों के पक्ष में नहीं हैं। हालांकि, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि किसानों की आर्थिक भलाई के लिए आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों को स्वीकार किया जाना चाहिए।

दो तकनीकी सत्रों के बाद एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया, जहां प्रतिभागियों ने संसाधन व्यक्तियों से प्रश्न पूछे और उनकी शंकाओं को दूर किया।

सिक्किम विश्वविद्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

विश्वविद्यालय ने दिनांक २९ अक्टूबर २०१८ से ३ नवंबर २०१८ तक "भ्रष्टाचार निवारण - नए भारत का निर्माण" विषय के साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम के एक भाग के रूप में विश्वविद्यालय में कई गतिविधियों का आयोजन किया गया था जिसमें प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, वाद-विवाद, स्लोगन और पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता, योग और पैनल चर्चा शामिल थी।

दिनांक २ नवंबर २०१८ को कंचनजंघा प्रशासनिक खंड से रापज्योर कावेरी छात्रा-आवास, ५ माइल तक एक वॉकथॉन का आयोजन किया गया। संकाय सदस्यों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों और छात्रों ने वॉकथॉन में भाग लिया, जिसे कुलसचिव श्री टी.के.कौल द्वारा हरी झंडी दिखाई गई। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के एक भाग के रूप में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों और छात्रों को कार्यवाहक कुलपति प्रो. ज्योति प्रकाश तमांग द्वारा एकता शपथ दिलाई गई।